१७ अप्रैल २००७, कुल पृष्ठ : ८, मूल्य : २/- आर. एन. आई. ३११०९/७७ RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक
ए-४, बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जीवन संध्या के पूर्व हमें भगवान आत्मा की प्राप्ति होना ही चाहिये-ऐसा दृढ संकल्प प्रत्येक आत्मार्थी को होना चाहिये।
ह्न आत्मा ही है शरण, पृष्ठ - १६१

वर्ष : ३०, अंक : २ सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : २५१ रुपये
अप्रैल (द्वितीय), २००७ प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** वार्षिक शुल्क : २५ रुपये

एक साथ पाँच-पाँच शिलान्यास

खेकड़ा (उ.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तेरहपंथ स्वाध्याय भवन ट्रस्ट द्वारा श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनमंदिर के पास क्रय की गई जमीन पर एक साथ 5 शिलान्यास किये गये।

द्वि-दिवसीय आयोजन में दिनांक 10 मार्च को श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान का आयोजन हुआ।

दिनांक 11 मार्च को **श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन** का शिलान्यास श्री सौराजजी-अमितजी खेकड़ा परिवार द्वारा, **श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला कक्ष** का शिलान्यास श्री सुमतप्रसाद-विनोदकुमार जैन परिवार बड़ौत द्वारा, **समाधि कक्ष** का शिलान्यास श्री सुभाषचंद-सुरेशचन्द-वकीलचन्द जैन परिवार नांगलोई-दिल्ली द्वारा, **ब्रह्मी आश्रम कक्ष** का शिलान्यास ब्र.बहन शोभाजी एवं उनके परिवार तथा प्रद्युम्नजी मुजफ्फरनगर परिवार द्वारा, **सुन्दरी ब्रह्मचर्याश्रम कक्ष** का शिलान्यास ब्र.विनोदजी कांधला परिवार द्वारा किये गया।

इस अवसर पर पण्डित प्रद्युम्नजी मुजफ्फर नगर, पण्डित राकेशजी शास्त्री नांगलोई, पण्डित मनीषजी शास्त्री खतौली एवं पण्डित कल्पेन्द्रजी खतौली के दोनों समय प्रवचनों का लाभ मिला।

सम्पूर्ण प्रतिष्ठा विधि बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद एवं उनके सहयोगी पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर के निर्देशन में सम्पन्न हुई।

कार्यक्रम में सहारनपुर, बड़ौत, खतौली, मेरठ, कांधला, बागपत, दिल्ली आदि स्थानों के प्रतिष्ठित महानुभावों ने लाभ लिया।

विधान एवं शिलान्यास सम्पन्न

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन समिति, कोहेफिजा के तत्त्वावधान में १५ से १८ मार्च तक नवलब्धि विधान एवं श्री महावीर भवन के शिलान्यास का आयोजन किया गया।

१८ मार्च को शिलान्यास समारोह माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंहजी चौहान एवं भोपाल के महापौर श्री सुनील सूद की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। शिलान्यास कर्त्ता श्री महेन्द्र जैन, सुनील जैन सुपुत्र श्रीमती बदामीदेवी परिवार थे।

समस्त कार्यक्रम तीर्थधाम मंगलायतन के सहयोग से बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना एवं पण्डित संजयजी शास्त्री अलीगढ द्वारा सम्पन्न कराये गये।

इस अवसर पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा एवं डॉ. कपूरचन्दजी कौशल भोपाल के आध्यात्मिक प्रवचनों से लगभग १००० लोग लाभान्वित हुये। **ह्न महेन्द्र चौधरी**

ज्ञायक भाव प्रबोधनी टीका - सहज बालबोधनी

बांसवाड़ा से पण्डित राजकुमारजी शास्त्री लिखते हैं कि - 'गूढतम रहस्यों को सहज-सरल-सरस शैली में प्रस्तुत करनेवाले ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा परमपूज्य आचार्य कुन्दकुन्ददेव विरचित समयसार परमागम पर लिखित **ज्ञायकभाव प्रबोधनी** नामक टीका वस्तुत: समयसार की सहज बालबोधनी टीका है।

वर्षों तक गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के हार्द को सुनकर वर्षों तक सुनाकर-लिखकर **जीवन हो जावे समयसार की भावना भाकर** आपके द्वारा प्रस्तुत यह टीका आपके अन्य साहित्य की भाँति, सभी पाठकों को पसन्द आयेगी एवं समयसार ग्रंथाधिराज को हृदयंगम कराने में सक्षम बनेगी।

इस टीका में आचार्य अमृतचन्द्र की टीका का अनुवाद भी अत्यन्त सहजग्राह्य हो गया है। साथ ही जयसेनाचार्य की टीका में स्वीकृत गाथाओं का संकलन भी इस टीका की विशेषता है। टीकाकार ने आवश्यकतानुसार उदाहरणों का भी प्रयोग किया है, जो विषय को समझने में सहायक है। तथा परिशिष्ट में ४७ शक्तियों की विशद व विस्तृत विवेचना भी पठनीय है।

ग्रन्थ का बाइंडिग एवं मुद्रण कार्य उत्तम है।'

गुरुदेव जयन्ती के अवसर पर

'भाई ! ऐसा अमूल्य मनुष्य-जीवन पाकर यों ही चला जावे, उसमें तू सर्वज्ञदेव की पहिचान न करे, सम्यग्दर्शन का सेवन न करे, शास्त्र स्वाध्याय न करे, धर्मात्मा की सेवा न करे और कषायों की मन्दता न करे ह्न तो इस जीवन में तूने क्या किया ?'

ह्न सौजन्य ह्न

मुक्ति ज्वैल्स

शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर पत्रिका

शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर पत्रिका

सम्पादकीय -

समाधि और सल्लेखना

२

– रतनचन्द भारिल्ल

यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि ह्न जब भी और जहाँ कहीं भी दो परिचित व्यक्ति बातचीत कर रहे होंगे वे निश्चित ही किसी तीसरे की बुराई भलाई या टीका-टिप्पणी ही कर रहे होंगे। उनकी चर्चा के विषय राग-द्वेषवर्द्धक विकथायें ही होंगे। सामाजिक व राजनैतिक विविध गतिविधियों की आलोचना-प्रत्यालोचना करके वे ऐसा गर्व का अनुभव करते हैं, मानों वे ही सम्पूर्ण राष्ट्र का संचालन कर रहे हों। भले ही उनकी मर्जी के अनुसार पत्ता भी न हिलता हो। नये जमाने को कोसना; बुरा-भला कहना व पुराने जमाने के गीत गाना तो मानो उनका जन्मसिद्ध अधिकार ही है। उन्हें क्या पता कि वे यह व्यर्थ की बकवास द्वारा विकथायें एवं आर्त-रौद्रध्यान करके कितना पाप बाँध रहे हैं, जोकि प्रत्यक्ष कुगति का कारण है।

भला जिनके पैर कब्र में लटके हों, जिनको यमराज का बुलावा आ गया हो, जिनके माथे के धवल केश मृत्यु का संदेश लेकर आ धमके हों, जिनके अंग-अंग ने जवाब दे दिया हो, जो केवल कुछ ही दिनों के मेहमान रह गये हों, परिजन-पुरजन भी जिनकी चिरविदाई की मानसिकता बना चुके हों। अपनी अन्तिम विदाई के इन महत्वपूर्ण क्षणों में भी क्या उन्हें अपने परलोक के विषय में विचार करने के बजाय इन व्यर्थ की बातों के लिए समय है?

हो सकता है उनके विचार सामायिक हों, सत्य हों, तथ्यपरक हों, लौकिक दृष्टि से जनोपयोगी हों, न्याय-नीति के अनुकूल हों; परन्तु इस नक्कार खाने में तूती की आवाज सुनता कौन है? क्या ऐसा करना पहाड़ से माथा मारना नहीं है? यह तो उनका ऐसा अरण्य रुदन है, जिसे पशु-पक्षी और जंगल के जानवरों के सिवाय और कोई नहीं सुनता।

वैसे तो जैनदर्शन में श्रद्धा रखनेवाले सभी का यह कर्तव्य है कि वे तत्वज्ञान के आलम्बन से जगत के ज्ञाता-दृष्टा बनकर रहना सीखें; क्योंकि सभी को शान्त व सुखी होना है, आनंद से रहना है, पर वृद्धजनों का तो एकमात्र यही कर्तव्य रह गया है कि जो भी हो रहा है, वे उसके केवल ज्ञातादृष्टा ही रहें, उसमें रुचि न लें, राग-द्वेष न करें; क्योंकि वृद्धजन यदि अब भी सच्चे सुख के उपायभूत समाधि का साधन नहीं अपनायेंगे, समाधि की साधना द्वारा अगले जन्म को सुखद स्थान का रिजर्वेशन नहीं करायेंगे, सल्लेखना से अपना जीवन और मरण सुधारने के बारे में नहीं सोचेंगे तो फिर उन्हें यह स्वर्ण अवसर कब मिलेगा? उनका तो अब अपने अगले जन्म-जन्मान्तरों के बारे में विचार करने का समय आ ही गया है। वे उसके बारे में क्यों नहीं सोचते?

इस वर्तमान जीवन को सुखी बनाने और जगत को सुधारने में उन्होंने अबतक क्या कुछ नहीं किया? बचपन, जवानी और बुढ़ापा ह्न तीनों अवस्थायें इसी उधेड़बुन में ही तो बिताईं हैं, पर क्या हुआ? जो कुछ किया, वे सब रेत के घरोंदे ही तो साबित हुए, जो बनाते-बनाते ही ढह गये और हम हाथ मलते रह गये; फिर भी इन सबसे वैराग्य क्यों नहीं हुआ?

आपको यह ज्ञात होना चाहिए कि यह मनुष्य पर्याय, उत्तम कुल व जिनवाणी का श्रवण उत्तरोत्तर दुर्लभ है। अनन्तानंत जीव अनादि से निगोद में हैं, उनमें से कुछ भली होनहार वाले बिरले जीव भाड़ में से उचटे विरले चनों की भाँति निगोद से एकेन्द्रिय आदि पर्यायों में आते हैं। वहाँ भी वे लम्बे काल तक पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं वनस्पतिकायों में जन्म-मरण करते रहते हैं। उनमें से भी कुछ विरले जीव ही बड़ी दुर्लभता से दो-इन्द्रिय, तीन-इन्द्रिय, चार इन्द्रिय एवं पंचेन्द्रिय पर्यायों में आते हैं। यहाँ तक तो ठीक; पर इसके उपरांत मनुष्यपर्याय, उत्तमदेश, सुसंगति, श्रावककुल, सम्यग्दर्शन, संयम, रत्नत्रय की आराधना आदि तो उत्तरोत्तर और भी महादुर्लभ है जो कि हमें हमारे सातिशय पुण्योदय से सहज प्राप्त हो गये हैं। तो क्यों न हम अपने इस इन अमूल्य क्षणों का सदुपयोग कर लें। अपने इस अमूल्य समय को विकथाओं में व्यर्थ बरबाद करना कोई बुद्धिमानी नहीं है।

इस संदर्भ में भूधरकवि कृत निम्न पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं ह्न

जोई दिन कटै, सोई आयु में अवश्य घटै;
बूँद-बूँद बीते, जैसे अंजुक्ति कौ जल है।
देह नित छीन होत, नैन तेजहीन होत;
जीवन मलीन होत, छीन होत बल है।
आवै जरा[१] नेरी[२], तकै[३] अंतक[४] अहेरी[५];
आबै परभौ नजीक, जात नरभौ निफल है।
मिलकै मिलापी जन, पूछत कुशल मेरी;
ऐसी दशा मांहि, मित्र काहे की कुशल है।

इसप्रकार हम प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं कि तत्त्वज्ञान के बिना, आत्मज्ञान के बिना संसार में कोई सुखी नहीं है, अज्ञानी न तो समता, शान्ति व सुखपूर्वक जीवित ही रह सकता है और न समाधिमरण पूर्वक मर ही सकता है।

अतः हमें आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए मोक्षमार्ग में प्रयोजनभूत दो-तीन प्रमुख सिद्धान्तों को समझना अति आवश्यक है। एक तो यह कि ह्न **भाग्य से अधिक और समय से पहले किसी को कभी कुछ नहीं मिलता** और दूसरा यह कि ह्न **न तो हम किसी के सुख-दुःख के दाता हैं, भले-बुरे के कर्त्ता हैं और न कोई हमें भी सुख-दुःख दे सकता है, हमारा भला-बुरा कर सकता है।**

अमितगति आचार्य ने कहा भी है ह्न

''परेणदत्तं यदि लभ्यतेस्फुटं, स्वयं कृतंकर्मनिरर्थकं तदा।।''

राजा सेवक पर कितना ही प्रसन्न क्यों न हो जाये; पर वह सेवक को उसके भाग्य से अधिक धन नहीं दे सकता। दिन-रात पानी क्यों न बरसे, तो भी ढाक की टहनी में तीन से अधिक पत्ते नहीं निकलते हैं। **(क्रमशः)**

---

१. बुढ़ापा २. निकट ३. देखता है ४. मृत्यु ५. शिकारी

तत्त्वचर्चा

छहढाला का सार 05

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

निगोद से निकलकर वह जीव पृथ्वी हुआ, जल हुआ, अग्नि हुआ, वायु हुआ, वनस्पति हुआ, फिर दो इन्द्रिय हुआ, उसके बाद तीन इन्द्रिय में गया, फिर चार इन्द्रिय हुआ। ये सब तिर्यंच गति के दु:ख हैं। उसके पश्चात् पाँच इन्द्रिय में गया; पर वहाँ पर भी असैनी तिर्यंचों में ही होते हैं; क्योंकि मनुष्य, देव और नारकी ह्न ये तो सब सैनी पंचेन्द्रिय ही होते हैं। इसलिए तिर्यंच गति का दु:ख सबसे बड़ा दु:ख है; क्योंकि उसमें एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के सभी जीव सामिल हैं।

जिसमें निगोद भी सामिल है; उस तिर्यंचगति के दु:ख बताने के बाद नरकगति के दु:ख बताये। उसके बाद मनुष्यगति में बचपन, जवानी और बुढ़ापे के दु:ख बताने के उपरान्त देवगति में भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषियों के दु:ख बताकर विमानवासी देवों के दु:ख बताते-बताते कह दिया कि वहाँ से च्युत होकर फिर जिसमें निगोद सामिल है ह्न ऐसी एकेन्द्रिय पर्याय में चला गया। इसप्रकार इस जीव ने पंच परावर्तनों को पूरा किया।

तहँते चय थावर तन धरै, यों परिवर्तन पूरे करै।।

इसप्रकार एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जीवों में लौकिक अनुकूलता और क्षयोपशमज्ञान का क्रमिक विकास है।

आप जानते हैं कि जिस देवगति को हम सुख का खजाना मान रहे हैं; उस गति का देव मरकर एकेन्द्रिय भी हो सकता है; लेकिन नारकी मरकर एकेन्द्रिय कभी नहीं होता। नारकी जीव नरक से निकलेगा तो नियम से सैनी पंचेन्द्रिय ही होगा। वह चार इन्द्रिय भी नहीं होगा अर्थात् कीड़ा-मकौड़ा भी नहीं होगा।

सुनो ! देवों के खाने-पीने का, अभक्ष्यादि भक्षण का, परस्त्री सेवन का ह्न कोई भी पाप नहीं है; फिर भी वह मरकर एकेन्द्रिय हो सकता है।

नरकगति में तो मारकाट मची रहती है। अन्य जीव इसे मारते-काटते हैं तो यह जीव भी दूसरों को मारता-काटता है। फिर भी एकेन्द्रिय से असैनी पंचेन्द्रिय तक की पर्यायों में वह नहीं जाता। ऐसा क्यों है ? ह्न इस बात पर जरा गंभीरता से विचार करो।

यदि आपको बिना रिजर्वेशन द्वितीय श्रेणी के डिब्बे में जाना पड़े और सहज ही सोने की सीट मिल जाये तो आराम ही आराम है। सब कहेंगे सोने की सीट मिल गई, इससे बढ़िया बात क्या हो सकती है ? उस सीट के लिए हम कोशिश भी करते हैं। सौ-दौ सौ रुपये भी देने को तैयार हो जाते हैं। पर ध्यान रहे कि सोने की सीट मिलेगी तो सामान पार हो सकता है और खड़े-खड़े जाओगे तो सामान सुरक्षित रहेगा।

सोनेवाले का सामान खोता है और जागनेवाला का नहीं खोता।

नरक में सोने का मौका ही नहीं मिलता है; इतने दण्डे पड़ते हैं कि नींद आने का सवाल ही नहीं है। इसलिए वहाँ ज्ञान की निधि नहीं लुटती है और देवगति में भोगों में इतने मस्त हो जाते हैं, ऐसे सो जाते हैं कि उनकी ज्ञाननिधि लुट जाती है और वे एकेन्द्रिय अवस्था में चले जाते हैं। नारकी तो सीधा निगोद में जाता नहीं। आप जिस देवगति को इतना बढ़िया मान रहे हो, वह देवगति कैसी है ? आप इसकी कल्पना कीजिए।

ऐसे परिवर्तन हमने अबतक अनन्त बार किये हैं।

अन्तिम ग्रीवक लौ की हद, पायो अनन्त विरियाँ पद।
पर सम्यग्ज्ञान न लाधो दुर्लभ निज में मुनि साधो।।

इसप्रकार यह जीव भटकता हुआ अन्तिम गैवेयिक तक अनन्त बार गया; परन्तु दुर्लभ सम्यग्ज्ञान प्राप्त नहीं किया, इसलिये अनन्त दु:ख उठाता रहा। उक्त सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र को मुनिराज स्वयं स्वयं में साधते हैं।

नवमें ग्रैवेयक तक गया; क्योंकि नवमें ग्रैवेयक तक गये बिना पंचपरावर्तन पूरे नहीं होते। इस जीव ने अनेक पंचपरावर्तन पूरे किये हैं। निगोद से निकला और परिवर्तन करके निगोद में पहुँच गया।

जगत की दृष्टि में भोगों की प्रधानता है; इसलिए वे स्वर्ग में सुख मान रहे हैं। नरक गति में भोग नहीं हैं, इसलिए दु:ख मान रहे हैं और सुखी होने के लिए उन भोगों को जोड़ने में ही लगे हैं। आचार्यदेव कहते हैं ह्न संसार में तो दु:ख ही दु:ख हैं, सुख है ही नहीं, तो मिलेगा कहाँ से ?

आप कहेंगे हम तो आये थे मोक्ष का मार्ग सुनने; लेकिन तुमने तो नरक के, तिर्यंच के दु:ख बताना शुरू कर दिये। हम तो छहढाला की क्लास में इसलिए आये थे कि हम आत्मा की बात सुनेंगे, मोक्ष का मार्ग मिलेगा और तुमने तो नरक की और निगोद की बात शुरू कर दी।

अरे भाई ! जबतक यह जीव जिस हालत में है और यह मानता है कि मैं इसी हालत में सुखी हूँ; तबतक वह हालत बदलने की कोशिश नहीं करेगा। अत: पहले तो उसे यह बताना कि तू इस हालत में सुखी नहीं है। चारों गतियों में दु:ख ही दु:ख हैं ह्न ऐसा ज्ञान हो जावे और मुझे इनसे बाहर निकलना है ह्न ऐसा संकल्प अन्दर में जाग जाये; तब हम निकलने का जो रास्ता बतायेंगे, उसे यह ध्यान से सुनेगा, अन्यथा यह ध्यान से सुनेगा भी नहीं। **(क्रमश:)**

शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर पत्रिका

शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर पत्रिका

१७ अप्रैल २००७, मूल्य : २/- आर. एन. आई. ३११०९/७७ RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

डॉ. भारिल्ल का 2007 में विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। यह उनकी 24 वीं विदेश यात्रा है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्नस्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर दें। उनकी सुविधा के लिए वहाँ के फोन एवं फैक्स नं.दिये जा रहे हैं, जहाँ डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे।

उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है ह्न

क्र.	शहर	सम्पर्क-सूत्र	दिनांक
1.	लंदन	**Bhimji Bhai Shah 192-384-0833 bhimji@hevika.com**	30 मई से 6 जून
2.	सान् फ्रांस्कोसिस	**Ashok Sethi (R) 408-517-0975 ashok_k_sethi@yahoo.com Vikas Jain 903-366-6524 vikasnd@gmail.com**	7 से 13 जून
3.	लॉसएंजिल्स	**Naresh Palkhiwala (R) 562-404-1729 (O) 626-814-8425 ext.8725 naresh.palkhiwala@westcov.org**	14 से 20 जून
4.	शिकागो	**Niranjan Shah (R) 847-330-1088 Bipin Bhayani (O) 815-939-3190 (R) 815-939-0056 (F) 815-939-3159**	21 से 30 जून
5.	न्यूजर्सी	**Atul Khara (R) 972-867-6535 (O) 972-424-4902 (F) 972-424-0680 E-mail : insty@verizon.net**	1 से 7 जुलाई
6.	वाशिंगटन डी.सी.	**Narendra Jain (R) 703-426-4004 E-mail : jainnarendra@hotmail (F) 703-321-7744**	8 से 11 जुलाई
7.	मियामी	**Mahendra Shah (R) 305-595-3833 (O) 305-371-2149 E-mail : bhitap@bellsouth.net**	12 से 17 जुलाई
8.	डलास	**Atul Khara (R) 972-867-6535 (O) 972-424-4902 (F) 972-424-0680 E-mail : insty@verizon.net**	18 से 23 जुलाई

पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री का विदेश कार्यक्रम

डॉ. भारिल्ल की तरह ही उन्हीं के शिष्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री भी कुछ वर्षों से धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं, उनका कार्यक्रम निम्नानुसार है - 30 मई से 4 जून - **शिकागो**, 5 से 10 जून - **बोस्टन**, 11 से 17 जून - **डलास**, 18 से 24 जून - **मियामी**, 25 से 30 जून - **टोरन्टो**, 1 से 8 जुलाई - **न्यूजर्सी**, 9 से 15 जुलाई - **सान् फ्रांस्कोसिस**, 16 से 21 जुलाई - **क्लीवलैण्ड**। ये उन्हीं स्थानों पर रुकेंगे, जहाँ डॉ. भारिल्ल रुकेंगे। बोस्टन में राजीव ए. जैन - 484-716-8801, टोरन्टो में रीमा अग्रवाल/संजय जैन - 905-686-5245 तथा क्लीवलैंड में कुशल बैद - 440-339-9519

अमायन में छात्रावास

आदरणीय बाल ब्र. रवीन्द्रकुमारजी जैन के सान्निध्य में अमायन (म.प्र.) में श्री वर्द्धमान शिक्षण संस्थान एवं छात्रावास का शुभारंभ दिनांक 19 जून, 07 को श्रुतपंचमी के दिन से किया जा रहा है।

इस संस्थान का उद्देश्य बालकों में लौकिक एवं धार्मिक अध्ययन के माध्यम से तत्त्वज्ञान एवं सदाचार के गहरे संस्कार डालना है।

उक्त संस्थान में कक्षा 9 से प्रवेश दिया जायेगा; एतदर्थ जो छात्र प्रवेश लेने के इच्छुक हों वे दिनांक 25 मई, 07 तक निम्नांकित पते पर सम्पर्क करें ह्न अखिल जैन, श्री वर्द्धमान शिक्षण संस्थान एवं छात्रावास,पो.अमायन, जिला- भिण्ड (म.प्र.) मो.9926485686

शुभ कामनायें ...

1. श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक पं. राहुल शास्त्री **बदरवास** के बड़े भ्राता **चि. रवि जैन** का **सौ. राशि जैन** के साथ दिनांक 2 मार्च को विवाह सम्पन्न हुआ। इस उपलक्ष में 150/-रुपये की राशि प्राप्त हुई।

2. जबलपुर निवासी श्रीमती शिखा जैन ध.प. श्री जितेन्द्र जैन द्वारा सुपुत्री के जन्मदिवस पर 201/-रुपये प्राप्त हुये।

उक्त दातारों को जैनपथ प्रदर्शक समिति की ओर से शुभ कामनायें !

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

नोट-एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.

प्रबन्ध सम्पादक : **पं.संजीवकुमार गोधा**,डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शन; इतिहास, नेट, एम.फिल एवं **पं. जितेन्द्र वि.राठी**, साहित्याचार्य

प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -

ए- ४ बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)

फोन : (०१४१) २७०५५८१, २७०७४५८

फैक्स : (०१४१) २७०४१२७